महीपाल

राँची महाधर्मप्रान्त का मासिक पत्र

सन्त फ्रान्सिस जेवियर
राँची महाधर्मप्रान्त के संरक्षक

November 2018 No. 3

महाधर्माध्यक्ष का संदेश

राजेश्वर येसु ख्रीस्त

"प्रभु प्रताप से विभूषित होकर राज्य करता है"(स्तोत्र 92:1)।

ख्रीस्त में मेरे प्रिय भाइयो और बहनो,

माता कलीसिया राजेश्वर येसु ख्रीस्त का महोत्सव प्रत्येक वर्ष बड़े उत्साह और समारोह के साथ मनाती है। इस वर्ष यह उत्सव 25 नवम्बर को मनाया जाएगा। हम राजाओं के राजा, प्रभु येसु ख्रीस्त का जय-जयकार करते, उनकी पूजा-आराधना करते, उन्हें सभी वरदानों के लिए धन्यवाद देते और अपने निवेदन उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। येसु ख्रीस्त सभी दृष्टिकोण से राजाधिराज हैं। इसी तथ्य पर हम मनन-चिंतन करेंगे।

सृजनहार और स्वामी: येसु ख्रीस्त राजाधिराज हैं, क्योंकि उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की है और वे सबकुछ के मालिक हैं। सबकुछ उन्हीं से प्रसरित होता है और सबकुछ उन्हीं में समाहित हो जाता है। उन्हीं के हाथ में जीवित और निर्जीव का अस्तित्व निर्भर करता है। "जो है, जो था और जो आनेवाला है, वही सर्वशक्तिमान प्रभु-ईश्वर कहता है-आल्फ़ा और ओमेगा (आदि और अंत) मैं हूँ" (प्रका॰ग्रंथ 1:8)। उसने अपने छलकते प्रेम के कारण मनुष्य की सृष्टि की और उसे अमर आत्मा दी है। वह अनन्त प्रेम से मनुष्य को प्रेम करता है और चाहता है कि मनुष्य भी उसे प्रेम करे। ईश्वर की इच्छा है कि मनुष्य इस धरती पर पवित्र जीवन बिताए, ताकि मरणोपरान्त अनन्त काल तक वह स्वर्गीय आनन्द में ईश्वर की महिमा निरंतर गाता रहे।

शासक और न्यायकर्ता: येसु ख्रीस्त राजाओं के राजा हैं, क्योंकि पिता ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार उन्हें दिया है (देखें, मत्ती 28:18) । वह स्वर्ग और पृथ्वी के जीवित प्राणियों और अजीवित वस्तुओं पर शासन करता है। वह चाहता है कि संसार में प्रेम, शान्ति और न्याय का राज्य हो; कि मनुष्य सम्मान पूर्वक और निर्भय होकर जीवन यापन करे और कि कोई उसपर अत्याचार और उसका शोषण न करे। प्रेम, शान्ति और न्याय ही ईश्वर का संविधान है जिसकी प्रेरणा से मनुष्यों को जीवन यापन करना है। इसी कारण से उसने मनुष्य जाति को दस आज्ञाएँ दी है। प्रेम के मापदण्ड से ही ईश्वर न्याय करता है। जो व्यक्ति उन दस आज्ञाओं का पालन करता है वह उनका कृपापात्र बनता है और जो उनकी अवहेलना करता है, वह शापित होता है। ईश्वर करुणामय है और पश्चात्ताप् करने वालों के लिए क्षमावान है। परन्तु वह न्यायी भी है और अपश्चात्तापी को उचित दण्ड देता है। अत: मनुष्य को चाहिए कि ईश्वर प्रदत्त बुद्धि-विवेक, ज्ञान-प्रज्ञा और स्वतंत्रता-इच्छाशक्ति का यथोचित प्रयोग करते हुए प्रेम, शान्ति और न्याय के मापदण्ड से जीवन निर्वाह करे।

महीपाल और मेषपाल: प्रभु येसु ख्रीस्त एकमात्र महीपाल और भला मेषपाल है। वह हमारी हर आवश्यकता की पूर्ति करता है। (दे० फिलि० 2:9-11) वह सूर्य से ऊर्जा, आकाश से वायु-वृष्टि और धरती से अन्न-जल, फल-फूल, घर-द्वार आदि देता है। इनके अलावा उसने ऐसा वरदान मिला है कि मनुष्य विभिन्न संवेदनाओं का सकारात्मक अनुभव करता है--आपसी प्रेम-स्नेह, मित्रता-आत्मीयता, मान-सम्मान, सेवा-सहायता, त्याग-तपस्या, संतुष्टि-आनन्द आदि। इनके विपरीत वह नुक्ता-चीनी, आलोचना-अपमान, झगड़ा-तकरार, मार-पीट, हिंसा-हत्या, चोरी-चपाटी, दमन-शोषण, अत्याचार-बलात्कार आदि का नकारात्मक अनुभव भी प्राप्त करता है। अपने जीवन में वह स्वास्थ्य-शक्ति और बीमारी-कमजारी का भी अनुभव करता है। वह प्रकृति की सुन्दरता-सम्पदा और प्रकोप-विनाश का भी अनुभव करता है। वह भले-बुरे लोगों, सज्जनों-दुष्टों, साधु-संतों, आस्तिकों-नास्तिकों, धनियों-गरीबों का अनुभव करता है। आध्यात्मिक रूप से वह पाप-पुण्य, भलाई-बुराई, पवित्र आत्मा की अन्त:प्रेरणा और दुष्टात्मा की परीक्षा आदि आध्यात्मिक अनुभव पाता है। इसीलिए हमारे हृदय में निरंतर संघर्ष होता रहता है। ईश्वर पाप, बुराई और परीक्षा पर विजय पाने के लिए कृपा और शक्ति देता है। वह आज्ञाकारिता के मामले में हमसे ज़बरदस्ती नहीं करता है। हमारे शारीरिक पोषण के लिए वह धरती की सारी उपज और सम्पत्ति को हमें उपलब्ध कराता है। हमें चाहिए कि हम उनका सही उपयोग करें। उसकी इच्छा है कि हम जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग करते हुए प्रेम के नियम के अनुसार निर्णय लें और उसे साहस पूर्वक जीवन में कार्यान्वित करें। दुर्भाग्यवश आज धन-सम्पत्ति के लोभ-लालच में मनुष्य धरती को अंधाधुंध लूटकर घायल कर रहा है। (दे॰"हे प्रभु, तेरी स्तुति हो!"-Laudato Si', 32)

अनुशासन की आवश्यकता : मनुष्य के अंदर अहंकार और स्वार्थ कूट-कूटकर भरे हैं। अत: ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए उसे अनुशासन और आत्मदमन की अति आवश्यकता है। वर्तमान समय में सर्वत्र अनुशासन की कमी और उसके दुष्परिणाम देखे जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक और मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इसी का फल है कि आज हिंसा, हत्या, अत्याचार, शोषण, बलात्कार, भ्रष्टाचार आदि कुकर्मों की वृद्धि हो रही है। भले लोगों की स्वतंत्रता लूटी जा रही है। उनके अच्छे नामों और ख्याति को मलिन किया जा रहा है। कमजोर वर्ग के लोगों की ज़मीन को छीनकर धनी लोगों को दिया जा रहा है ताकि वे बड़े-बड़े कारखाने बैठा सकें। संविधान प्रदत्त सुविधाओं और अधिकारों से गरीबों को वंचित किया जा रहा है। यह घोर अन्याय है। इसके विरुद्ध सोच-समझकर सकारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है।

प्रिय भाईयो और बहनो, चलिए हम राजाओं के राजा की समुचित आराधना, पूजा और महिमा करें और उनसे कमजोर और शोषित वर्ग के लोगों के लिए निरंतर निवेदन करें। इसके साथ-साथ अनुशासन में रहकर अपने सभी कर्त्तव्यों को पूरा करें। एक-न-एक दिन राजाओं का राजा दुष्टों को दण्ड देगा और भले लोगों को पुरस्कार!

+फेलिक्स टोप्पो, ये॰सं॰

आधिकारिक सूचना

अक्टोबर 6, 2018.

प्रति, सभी पुरोहितगण, पल्लियाँ, संस्थायें, धर्मसंघीय संस्थायें, राँची महाधर्मप्रान्त,

प्रिय पुरोहितगण, भाइयो एवं बहनो,

1) मुझे प्रसन्नता है कि पहले दी गई सूचना के अनुसार निम्नलिखित पुरोहितों का चुनाव करके पुरोहितों की परिषद्/अधिसभा का विधिवत गठन किया गया है। इनमें से कुछ पदेन सदस्य हैं, कुछ का चुनाव सितम्बर 2018 में मतदान द्वारा किया गया है और कुछ का मनोनयन कलीसियाई कानून संख्या 495-501 के तहत मैंने किया है। ये नियुक्तियाँ 8 अक्टोबर 2018 से लेकर पाँच वर्षों तक प्रभावी रहेंगी।

पदेन सदस्य		11	Fr. Deepak Tauro
1	Bishop Telesphore Bilung, SVD	12	Fr. Mukul Kullu
2	Bishop Theodore Mascarenhas, SFX	13	Fr. Hilarius Barla, TOR
3	Fr. Sebastian Tirkey, Vicar General	14	Fr. Alok Nag
4	Fr. Theodore Toppo, Chancellor	**मनोनीत सदस्य**	
चयनित सदस्य		15	Fr. William Tirkey, Dean
5	Fr. Anand David Xalxo	16	Fr. Nabor Lakra, S.J.
6	Fr. Joseph Marianus Kujur, S.J.	17	Fr. James Vikrant Dungdung, S.J.
7	Fr. Hilarius Kullu, SDB	18	Fr. Marcel Barla, OFM Cap.
8	Fr. Hubertus Beck	19	Fr. Robin Praful Toppo, Dean
9	Fr. Eustace Xalxo	20	Fr. Vincent Minj, Dean

2) मैंने पुरोहितों की परिषद्/अधिसभा से निम्नलिखित व्यक्तियों को महाधर्मप्रान्तीय सलाहकार मण्डली के सदस्य (दे॰ कलीसियाई कानून, 501 §1) नियुक्त किये हैं। ये नियुक्तियाँ 8 अक्टोबर 2018 से लेकर पाँच वर्षों तक प्रभावी रहेंगी।

1	Bishop Telesphore Bilung, SVD	7	Fr. Hilarius Kullu, SDB
2	Bishop Theodore Mascarenhas, SFX	8	Fr. Hubertus Beck
3	Fr. Sebastian Tirkey	9	Fr. Ignace Topno
4	Fr. Theodore Toppo	10	Fr. Mukul Kullu
5	Fr. Anand David Xalxo	11	Fr. Vincent Minj
6	Fr. Joseph Marianus Kujur, S.J.	12	Fr. Robin Praful Toppo

मैं पुरोहितों की परिषद्/अधिसभा के पूर्व सदस्यों के प्रति उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही साथ मैं पुरोहितों की परिषद्/अधिसभा के नये सदस्यों और महाधर्मप्रान्तीय सलाहकार मण्डली से अनुरोध करता हूँ कि वे ईश प्रजा की बेहतर आध्यात्मिक सेवा और सुसमाचारी साक्ष्य के लिए अपने महत्वपूर्ण सुझाव देते रहें।

प्रभु में आप सबका विश्वस्त,

+फेलिक्स टोप्पो, ये॰स॰
राँची के महाधर्माध्यक्ष

संकलित समाचार

महाधर्मप्रान्त के नये जनसम्पर्क अधिकारी नियुक्त

राँची. श्रद्धेय फादर आनन्द डेविड ख़लख़ो को राँची महाधर्मप्रान्त का नया जनसम्पर्क अधिकारी नियुक्त किया गया है। महाधर्माध्यक्ष फेलिक्स टोप्पो ने 3 सितम्बर 2018 को इस नये सृजित पद पर फादर ख़लख़ो को तुरन्त प्रभाव से नियुक्त किया। मांडर में जन्मे फादर आनन्द डेविड ने राँची विश्वविद्यालय से भूगोल विषय में स्नातक की डिगरी लेकर स्थानीय सन्त अलबर्ट कॉलेज से पुरोहिताई का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ष 2006 में पुरोहिताभिषेक पाकर उन्होंने मंगलोर से अस्पताल प्रबंधन विषय पर एम॰ए॰ की डिगरी हासिल की। उन्हें चार भाषाओं का ज्ञान है। पुरोहिताभिषेक के बाद उन्हें कार्डिनल तेलेस्फोर पी॰ टोप्पो का व्यक्तिगत सहायक बनाया गया। उसके बाद पाँच सालों तक वे सी॰बी॰सी॰आई॰ सोसाइटी फॉर मेडिकल एडुकेशन-नोर्थ इंडिया, राँची के सचिव सह जनसम्पर्क अधिकारी रहे। फिर उन्हें दिल्ली में सी॰बी॰सी॰आई॰ के सेक्रेटरी जेनरल का सचिव बनाया गया। इन जिम्मेवारियों के अलावा उन्होंने महाधर्मप्रान्त में पुरोहिती उम्मीदवारों के प्रशिक्षण और मेषपालीय देखरेख सम्बन्धी सेवायें दीं।

बनहोरा पल्ली की रजत जयन्ती सम्पन्न

बनहोरा. 14 अक्टोबर रविवार : बनहोरा पल्ली की 25 वर्षीय रजत जयन्ती आज यहाँ धूमधाम से मनाई गई। दिव्यशब्द धर्मसंघी मान्यवर तेलेस्फोर बिलुंग, राँची के सहायक धर्माध्यक्ष की अध्यक्षता में पल्ली परिसर में समारोही पवित्र मिस्सा का अनुष्ठान हुआ जिसमें भारी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही। पल्ली वासियों द्वारा प्रस्तुत अतिथियों के स्वागत समारोह के साथ पल्ली पुरोहित फादर दोनातुस तिर्की, टी॰ओ॰आर॰, ने विश्वासी समुदाय की ओर से सहयोगी पुरोहितों और अतिथियों को शुभकामनायें दीं।

27 नवम्बर को महाधर्माध्यक्षीय स्कंधपट धारण समारोह निर्धारित

भारत में सन्त पापा के प्रतिनिधि, महामहिम महाधर्माध्यक्ष ज्याँबत्तिस्ता दिक्वात्रो द्वारा 27 नवम्बर 2018 को संध्या 5.30 बजे राँची महागिरजाघर में आयोजित समारोही पवित्र मिस्सा के दौरान महामान्यवर फेलिक्स टोप्पो, ये०स०, को महाधर्माध्यक्षीय स्कंधपट प्रदान किया जायेगा। विश्वासियों से आग्रह किया जाता है कि वे इस अनुष्ठान में उपस्थित होकर अपने नये महाधर्माध्यक्ष के लिए प्रार्थना करें और उन्हें अपनी शुभकामनायें दें। धन्यवाद।

पूजन विधि में स्कंधपट का प्रचलन चौथी शताब्दी से चला आया है। बाद में इसे धर्माध्यक्षों के साथ जोड़कर देखा जाने लगा। ग्यारहवीं शताब्दी में महाधर्माध्यक्ष लोग इसे धारण करने के लिए सन्त पापा से अनुमति लेते थे। आगे चलकर इसे वार्षिक उपलक्ष बना दिया गया जिसके अन्तर्गत दुनिया भर के नवनियुक्त महाधर्माध्यक्षगण रोम पहुँचकर व्यक्तिगत तौर पर सन्त पापा से स्कंधपट को ग्रहण करते थे।

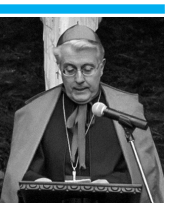

दो इंच चौड़े गोलाकार फीते की शक्ल का आधुनिक स्कंधपट महाधर्माध्यक्ष की गरदन, छाती और कंधों पर लिपटा होता है। व्यक्ति के आगे और पीछे की ओर स्कंधपट की समान चौड़ाई की दो लटकनें झूलती हैं। उनकी लम्बाई बारह इंच होती है। लटकनों को वजन देने के लिए उनमें सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े पिरोकर उनपर काले रेशम का आवरण चढ़ाया हुआ होता है। स्कंधपट का प्रतीक बहुत अर्थपूर्ण है। इसका बाकी हिस्सा सफेद ऊन का बना होता है जिसमें उन दो भेड़ों का थोड़ा ऊन मिला हुआ होता है जिन्हें प्रति वर्ष रोम स्थित लातेरन महागिरजाघर की मुख्य वेदी पर समारोही पवित्र मिस्सा के दौरान आशीष देकर सन्त पापा को लगान स्वरूप भेंट किया जाता है। स्कंधपट में काले धागों के छ: छोटे-छोटे क्रूस उकेरे हुए होते हैं। उनमें से छाती, पीछे और बायीं बाँह के भागों में रत्न जड़ित सोने की एक-एक सूई डालने की व्यवस्था होती है। स्कंधपट को चासुबल के ऊपर धारण किया जाता है।

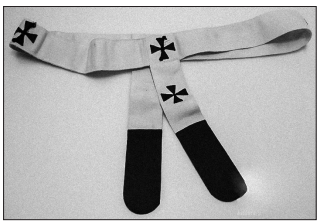

स्कंधपट का उपयोग सिर्फ सन्त पापा और महाधर्माध्यक्षों द्वारा किया जाता है। किन्तु महाधर्माध्यक्ष तबतक इसे नहीं पहन सकते, जबतक कि उनके अनुरोध पर इसे प्रदान नहीं किया गया हो। कभी-कभी धर्माध्यक्षों को विशेष अनुग्रह स्वरूप भी स्कंधपट प्रदान किया जा सकता है। परन्तु इस अनुग्रह से उनकी शक्तियों, अधिकारक्षेत्र अथवा वरीयता में कोई वृद्धि नहीं होती है। नये स्कंधपटों को सन्त पेत्रुस और सन्त पौलुस के पर्वदिवस पर कलीसियाई सांध्य प्रार्थना के समय समारोही आशीष दी जाती है। फिर उन्हें चान्दी जड़े हुए छोटे सन्दूकों में तबतक सुरक्षित रखा जाता है जबतक कि उनकी जरूरत न हो। वर्ष 2015 में सन्त पापा फ्रान्सिस ने व्यवस्था दी कि रोम के महाधर्माध्यक्ष (अर्थात् खुद सन्त पापा) के हाथों स्कंधपट ग्रहण करने के लिए महाधर्माध्यक्षों को विशेष तौर पर रोम न बुलाया जाये।

अब महाधर्माध्यक्षगण सन्त पेत्रुस और सन्त पौलुस के पर्वदिवस पर ही रोम आकर सन्त पापा की अध्यक्षता में सम्पन्न समारोही पवित्र मिस्सा में सहभागी होते हैं और वे एकान्त में व्यक्तिगत तौर पर सन्त पापा से स्कंधपट को ग्रहण करते हैं। उनके अपने महाधर्मप्रान्त लौटने पर सन्त पापा के प्रतिनिधि विशेष मिस्सा के दौरान विश्वासियों के समक्ष उस स्कंधपट को महाधर्माध्यक्ष को पहनाते हैं। इस तरह स्थानीय महाधर्मप्रान्त की महत्ता को उजागर करने के साथ-साथ अधिक संख्या में स्थानीय विश्वासी समुदाय को सहभागी होने का अवसर मिलता है। सन्त पापा बेनेदिक्त सोलहवें ने परमाधिकारी के रूप में अपने पहले प्रवचन में स्कंधपट की व्याख्या करते हुए कहा, "स्कंधपट की प्रतीकात्मकता कहीं अधिक गहरी है: ऊन उन खोये हुए, बीमार अथवा कमजोर भेड़ों का प्रतीक है जिन्हें गड़ेरिया अपने कंधों पर ढोकर जीवन-जल के निकट ले आता है।" धर्माध्यक्ष को उसके मेषपालीय दायित्व का स्मरण कराने के साथ-साथ स्कंधपट उस जूवे की भी याद दिलाता है जिसे उसे ढोना है। स्कंधपट पर जड़े हुए छ: क्रूसचिह्न भी धर्माध्यक्ष को उनके इस दायित्व का स्मरण कराते हैं कि प्रभु येसु के शिष्य के रूप में उन्हें अनेक क्रूसों को ढोना है। इन सबके अतिरिक्त पारम्परिक तौर पर सन्त पापा से जुड़ा होने के कारण स्कंधपट धर्माध्यक्षों की एकता को भी रेखांकित करता है।

पूर्व माता जेनेरल, डॉ० सि० अनुपा कुजूर, डी०एस०ए०, का निधन

28 सितम्बर 1947-27 सितम्बर 2018

राँची, 28 सितम्बर, शुक्रवार : सन्त अन्ना की पुत्रियाँ धर्मसंघ की पूर्व माता जेनेरल (1999-2004), डॉ० सि० अनुपा कुजूर का निधन कल रात 9.10 बजे धर्मसंघ के उल्हातु स्थित वृद्धाश्रम में हुआ। दिव्यशब्द धर्मसंघी, मान्यवर तेलेस्फोर बिलुंग, राँची के सहयोगी धर्माध्यक्ष की अध्यक्षता में आज स्थानीय महागिरजाघर में सम्पन्न समारोही पवित्र मिस्सा के बाद उनके पार्थीव अवशेषों को टमटम कब्रिस्तान में ससम्मान दफना दिया गया। अनूठे संयोग से आज ही उनका जन्मदिन भी है। वे लम्बे समय से बीमार चल रही थीं। कुड़ पल्ली के लवागईं गाँव में 28 सितम्बर 1947 को जन्मी माता अनुपा ने अपने जीवन के 51 वर्ष धर्मसंघी जीवन में व्यतीत किये। वे मतियस कुजूर एवं फिलिसिता तिग्गा की तीन सन्तानों में से सबसे छोटी और अकेली पुत्री थीं। उन्होंने भूगोल विषय में पी०एच०डी० तक की पढ़ाई क्रमश: पटना और राँची विश्वविद्यालयों से पूरी की। धर्मसंघ में प्रमुख पदों पर सेवायें देने के अतिरिक्त उन्होंने अपने जीवन के क्रियाशील 17 वर्ष परमवीर अल्बर्ट एक्का कॉलेज, चैनपुर, में व्याख्यान देते हुए बिताये। सेवानिवृत्ति के बाद उन्हीं के अनुरोध पर उन्हें गुमला धर्मसंघीय प्रोविंस से राँची धर्मसंघीय प्रोविंस में स्थानान्तरित करके संत अन्ना कॉन्वेन्ट हरमू में रखा गया। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम समय तक स्थानीय संत कुलदीप उच्च विद्यालय में अध्यापन कार्य जारी रखा।

सुपीरियर जेनेरल की हैसियत से माता अनुपा की अगुवाई में 8 अप्रैल 2002 को संत अन्ना की पुत्रियाँ धर्मसंघ को वाटिकन से परमधर्मपीठीय मान्यता प्राप्त हुई। इससे पहले यह धर्मसंघ महाधर्मप्रान्तीय मान्यता से युक्त था। माता अनुपा के ही नेतृत्त्व में 2 फरवरी 2003 को गुमला धर्मसंघीय प्रोविन्स तथा 11 फरवरी 2003 को राँची धर्मसंघीय प्रोविंस का विधिवत गठन हुआ। इससे पहले सम्मिलित तौर पर ये दोनों क्षेत्र राँची धर्मसंघीय प्रोविंस के नाम से जाने जाते थे। प्रेरितिक कार्यों में गुणवत्ता की वृद्धि हेतु उन्होंने धर्मबहनों को उच्च शिक्षा दिलाने के ठोस कदम उठाये। इस क्रम में कई धर्मबहनें न केवल छोटानागपुर से बाहर विभिन्न स्थानों में अध्ययन के लिए भेजी गईं, बल्कि विभिन्न संस्थाओं में कार्यानुभव द्वारा उन्हें दक्ष बनाने की योजना पर ठोस कदम उठाये गये। धर्मसंघ की संस्थापिका और प्रभु की सेविका, माता बेर्नादित्त किसपोट्टा की जीवनी को कलमबद्ध करने के साथ-साथ उन्होंने धर्मसंघ के वर्ष 1950 तक के इतिहास को "सेवा की सौगात" शीर्षक ग्रन्थ में संचित कर रखा है। पिता ईश्वर दिवंगत माता अनुपा कुजूर को अनन्त शान्ति का पुरस्कार प्रदान करे।

फादर लीवन्स की मृत्यु की 125वीं वर्षगाँठ बेल्जियम में सम्पन्न

मूर्सलेदे (बेल्जियम). 6 अक्टोबर, शनिवार. प्रभु-सेवक, फादर कोन्सटंट लीवन्स की मृत्यु की 125वीं वर्षगाँठ आज उनकी पल्ली मूर्सलेदे में धूमधाम से मनायी गयी। ब्रुग्ग के

धर्माध्यक्ष, मान्यवर लोद आरत्स की अगवाई में सम्पन्न पवित्र मिस्सा बलिदान में श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। निचले यूरोपीय क्षेत्र में कार्यरत येसु धर्मसंघियों के उच्चाधिकारी, फादर योहान वेर्सचुयेरेन, इस समारोह के विशिष्ठ अतिथि रहे। रोम में कार्यरत और अध्ययनरत चार येसु धर्मसंघी पुरोहितों समेत राँची से मौके पर पहुँचे हुए फादर ओरेल ब्रिस ने भी वेदी पर धर्माध्यक्ष महोदय का साथ दिया।

भारतीय उपलक्ष्य, 25वीं वर्षगाँठ : फादर लीवन्स के पार्थीव अवशेष 31 अक्टोबर 1993 को छोटानागपुर पहुँचे।

बेल्जियम में कार्यरत राँची की टिल्डोंक उर्सुलाईन धर्मबहनों ने इस अवसर के लिए रचित भक्तिगानों, नाच और समारोह स्थल की साज-सज्जा के साथ महत्वपूर्ण योगदान किया। ब्रुग्ग धर्मप्रान्त के फादर बार्त गेरिल ने छोटानागपुर में फादर लीवन्स के कार्यकलापों पर प्रकाशित एक पुस्तक को प्रस्तुत किया। ज्ञातव्य है कि वे अधीकृत तौर पर फादर लीवन्स की धन्य घोषणा पर काम कर रहे हैं, जबकि भारत भूमि में येसु धर्मसंघी फादर ओरेल ब्रिस भी उनका सहयोग कर रहे हैं। फादर लीवन्स पर निर्मित एक संग्रहालय का उद्घाटन भी प्रदेश के उच्चाधिकारी श्री गीर्त बोर्जेस ने मौके पर किया। फादर लीवन्स का स्वर्गवास 7 नवम्बर 1893 को 37 वर्ष की अवस्था में बेल्जियम में हुआ।

महाधर्माध्यक्ष ने दिघिया में समन्वय पर जोर दिया

दिघिया. 30 सितम्बर, रविवार : अपनी पहली आधिकारिक मुलाकात में राँची के महाधर्माध्यक्ष फेलिक्स टोप्पो, ये०स०, ने

आज दिघिया पल्ली वासियों से आग्रह किया कि वे मसीही विश्वासियों के अनुकूल मेलमिलाप और सामुदायिक समन्वय का जीवन व्यतीत करें। पाँच सौ से अधिक विश्वासियों के साथ अर्पित समारोही मिस्सा पूजा के अन्तर्गत उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि ईश्वर के अनूठे वरदानों को वे पाप और आपसी ईर्ष्या से कलुषित न करें। उन्होंने विश्वासियों को विशेष तौर पर सचेत किया कि वे अपने बुरे उदाहरणों द्वारा बालक-बालिकाओं के पाप का कारण हरगिज न बनें।

सुबह 7.30 को पल्ली पुरोहित, श्रद्धेय फादर भिन्सेंट मिंज द्वारा समायोजित इस मिस्सा पूजा में पल्ली के सहयोगी पुरोहित भी शामिल रहे। मिस्सा पूजा से पहले दोपहिया वाहनों पर सवार पल्ली वासियों ने बेड़ो से महाधर्माध्यक्ष महोदय की अगवानी की और उन्हें ससम्मान पल्ली परिसर तक ले आये। वहाँ माताओं ने आदिवासी नेग-दस्तूर के अनुसार स्वागत करके उन्हें समारोह स्थल तक पहुँचाया। कार्यक्रम का समापन एक स्वागत समारोह द्वारा किया गया जिसके अन्तर्गत एक संक्षिप्त प्रतिवेदन को पढ़कर महाधर्माध्यक्ष से पल्ली का परिचय कराया गया।

Forthcoming Events

- Mass at Kantatoli Cemetery (All Souls Day) on 2nd November 2018 at 1.00 PM.
- Silver Jubilee of Gumla Archdiocese on 11th November 2018, at 9.00 AM in St. Patrick's Ground, Gumla.
- Recollection and Meeting of Ranchi Archdiocesan Priests on 15th November 2018 at 8.30 AM in Archbishop's House.
- Eucharistic Procession on the occasion of Christ the King Feast will begin in Ranchi City from St. Mary's Cathedral on 25th November 2018 at 1.00 PM.

Wishing His Lordship, Theodore Mascarenhas, SFX, a Happy Birthday on 9th November 2018.

Programme of Archbishop Felix Toppo
November 2018

Dt	Events	Time	Place
02	Mass for all Faithful Departed at the Cemetery	1.00pm	Dangratoli
08	Annual Feast. Mass	08.30 am	Khuntpani
10	Diaconate Ordination of George Topno, SDB	AM	Ranchi
11	Jubilee in Gumla		Gumla
12	Cooperative Society General Body Meeting		Gumla
13	GB of Constant Lievens' Hospital & R Centre	10.00 am	Mandar
15	Recollection and Diocesan Priests' meeting	09.00-04.00	ABH
16	Blessing of New Block of St. Anne's School		CBSA
17	CSS Final Profession	09.30 am	Samlong
21	Mass. DSA Sisters' Final Profession		Mother House, Ranchi
25	Eucharistic Procession—Feast of Christ the King	1.00pm to 6.00pm	Ranchi
26	Feast Bl. James Alberione—Mass	06.30 am	St. Paul's House, Lalkhatanga
27	Annual Meeting of CDPI, CRI & RBC	09.00 am	Loadih, Ranchi
28	CDPI, CRI & RBC Meeting continues	09.00 am	Loadih
Program of Archbishop Felix Programme – Dec - 2018			
01	Meeting with Notredame Sup. Gen.	10.00 am	ABH
03	SND Provincial		ABH
08	DSA Sisters' First Profession- Mass.		Samlong

Bishop Telesphore Bilung's Programme
November 2018

4	Confirmation	7.00am	Saparom
5	Holy Eucharist	6.00am	DSA, Mother House
11	Aam Sabha of Mahila Sangh	6.00am	Saparom
15	Recollection for Diocesan Priests	8.30am	ABH
26-28	Meeting — CDPI/CRI/JHAAN		DSA, Generalate
27	Imposition of Pallium and Holy Eucharist		Cathedral
29	Personal Retreat (29 Nov to 6th Dec)		Indore
Dec 2018			
7	Returns to Ranchi		
8	Final Profession	10.00am	Samlong

केवल निजी वितरण के लिए। राँची महाधर्मप्रान्त के लिए फा० सीप्रियन एक्का, ये०स० द्वारा सम्पादित। सूचनायें, समाचार अथवा विचार इस ई-मेल पर भेजे जा सकते हैं: <ranchiarchdiocese@gmail.com>